दिनांक : .8.2019

प्रति,

मा. केंद्रीय गृहमंत्री

नई देहली.

विषय : स्वतंत्रतावीर सावरकर के देहली विश्वविद्यालय के पुतले पर कालिख लगानेवाले अक्षय लाकडा को बंदी बनाने और राष्ट्रपुरुषों का अनादर रोकने हेतु कानून बनाने के संदर्भ में ...

महोदय,

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने हाल ही में देहली विद्यापीठ में स्वतंत्रतावीर सावरकर, नेताजी सुभाषचंद्र बोस और हुतात्मा भगतसिंह की त्रिमूर्तियों के एकत्रित पुतले लगाए थे । २१ अगस्त २०१९ की रात को कांग्रेस के 'नेशनल स्टुडंट्स यूनियन ऑफ इंडिया' (एन.एस.यू.आय.) इस विद्यार्थी संगठन के देहली अध्यक्ष श्री. अक्षय लाकडा और संगठन के अन्य देशद्रोही कार्यकर्ताओं ने स्वतंत्रतावीर सावरकर के पुतले को चप्पलों का हार पहनाकर कालिख पोता । यह कृत्य बहुत संतापजनक और निषेधार्ह है । इस प्रकरण में देहली पुलिस ने 'एन.एस.यू.आय.' के कुछ कार्यकर्ताओं को बंदी बनाया और उन्हें समझा-बुझाकर छोड दिया गया । यह पुतले विश्वविद्यालय की अनुमति लिए बिना लगाए जाने से विश्वविद्यालय प्रशासन ने उन्हें २५ अगस्त को हटाया ।

स्वतंत्रतावीर विनायक दामोदर सावरकर एक महान क्रांतिकारी, साहित्यकार, लेखक और देशभक्त थे । विदेश में जाकर वे बैरिस्टर बने थे और उसका उपयोग करके वे स्वयं के लिए बहुत पैसा कमा सकते थे; परंतु उन्होने ऐसा न करते हुए अपना जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित किया; परंतु तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने उनसे सौतेला व्यवहार करते हुए उनकी ओर सदा ही दुर्लक्ष किया । दिवंगत राजीव गांधी को भारतरत्न पुरस्कार दिया जाता है; परंतु देश को स्वतंत्रता मिले इसलिए क्रांतिकारक घडनेवाले/बनानेवाले, देश के लिए दो बार आजन्म कारावास का दंड भोगनेवाले सावरकरजी को इस पुरस्कार से सम्मानित नहीं किया जाता, यह दुर्भाग्यपूर्ण है ।

इस आधार पर हम कुछ सूत्र आपके निदर्शन में लाना चाहते हैं ....

१. भारत को अंग्रजों की गुलामी से मुक्त करने हेतु केवल सावरकरजी ही नहीं, अपितु उनके संपूर्ण परिवार ने ही असंख्य यातनाएं सही हैं ।

२. वीर सावरकरजी ने किशोरावस्था में ही देश को स्वतंत्रता दिलाने हेतु सशस्त्र क्रांति की शपथ ली और उसका उन्होंने अंततक निर्वहन किया । युवावस्था, गृहस्थी, घर-बार, पूर्ण जीवन ही देश के लिए समर्पित करनेवाले वे एक द्रष्टा युगपुरुष थे !

३. बंगाल के विभाजन के विरुद्ध ७.१०.१९०५ के दिन पुणे में विदेशी वस्त्रों की पहली होली जलाई गई । तब लोकमान्य तिलक एवं शि.म. परांजपे की साक्ष्य से पुणे में सार्वजनिक पद्धति से विदेशी वस्त्रों की होली जलानेवाले सावरकरजी ही पहले भारतीय नेता थे ।

४. उन्हें कभी भी मृत्यु का भय नहीं लगा । अंग्रेजों ने उन्हें काले पानी का दंड सुनाया; परंतु उन्होंने अंदमान की कालकोठरी में भी अपनी प्रतिभा को जीवित रखा । उन्होंने सहस्रों पृष्ठों का वाङ्मय लिखा है । उस काल में इस प्रकार का अन्य कोई युगप्रवर्तक क्रांतिकारी नहीं था ।

५. अंदमान में कारावास भोगकर वापस आनेपर रत्नागिरी में स्थानबद्ध होते हुए भी सावरकरजी ने ग्रंथलेखन के अतिरिक्त अस्पृश्यता निवारण, भाषाशुद्धि आदि अभियानों सहित 'स्वदेशी'पर भी अपना ध्यान केंद्रित किया था।

६. सावरकरजी ने देशहित के लिए, स्वत्व के लिए तथा देश की अस्मिता हेतु कभी समझौता नहीं किया और कभी राष्ट्राभिमान गिरवी नहीं रखा ।

७. ऐसे महान स्वतंत्रतावीर सावरकर का कांग्रेस ने स्वतंत्रता के पश्चात भी १८ वर्ष अपमान किया और उनकी मृत्यु के पश्चात आजतक वही कर रही है ।

८. देहली विश्वविद्यालय में स्वतंत्रतावीर सावरकर का पुतला अवैध रूप से लगाया जाना, अयोग्य ही है; परंतु श्री. अक्षय लाकडा ने उनके पुतले पर कालिख पोतना, यह अक्षम्य है । इससे श्री. लाकडा की राष्ट्रपुरुषों के प्रति अयोग्य और देशद्रोही मनोवृत्ति दिखाई देती है ।

८. 'एन.एस.यू.आय.' विद्यार्थी संगठन के देशद्रोही कार्यकर्ताओं द्वारा किया हुआ यह अपमान केवल स्वतंत्रतावीर सावरकर का नहीं, अपितु संपूर्ण देश का है; संपूर्ण क्रांतिकारियों के आंदोलन का; समस्त देशप्रेमी नागरिकों का है ।

*** अतः इस संदर्भ में हम ये मांग करते हैं कि ...**

१. स्वतंत्रतावीर सावरकर के संदर्भ में अक्षम्य अपराध करनेवाले 'एन.एस.यू.आय.' के श्री. अक्षय लाकडा को पुलिस तत्काल बंदी बनाए । उनपर देशद्रोह का अपराध प्रविष्ट कर कठोर से कठोर कार्यवाही की जाए ।

२. स्वतंत्रतावीर सावरकर का यह अपमान सदा के लिए रोकने हेतु उनको 'भारतरत्न' घोषित किया जाए ।

३. राष्ट्रपुरुषों के स्मारकों का अनादर करनेवालों पर देशद्रोह का अपराध प्रविष्ट करने का नया कानून बनाकर देशविरोधी शक्तियों पर रोक लगाया जाए ।

४. अंदमान में जो स्वतंत्रतावीर सावरकरजी की पंक्तियों को हटा दिया गया है, उन्हें पुनः वहां लगाने हेतु केंद्र सरकार आगे आए ।

५. फ्रान्स सरकार से चर्चा कर मार्सेलिस में स्वतंत्रतावीर सावरकरजी का भव्य स्मारक बनाया जाए ।

आपका विश्वासपात्र,

संपर्क :